

## राम भक्ति काव्य परंपरा में महाकवि तुलसी का स्थान

Dr.Sajina. P. S (डॉ. सजिना. पी. एस )

Assistant Professor of Hindi

University College, Thiruvananthapuram, pin -695034, Kerala

Phone :7025527422

**शोध सारांश :** राम काव्य परंपरा के प्रमुख कवि होने से हम तुलसी को ही केन्द्र मानकर रामकाव्य की विशेषताओं का विवेचन करते हैं। रामकाव्य परंपरा को जन सामान्य तक पहुँचाने में गोस्वामी तुलसीदास जी का महत्वपूर्ण योगदान है। तुलसीदास जी की रचनाओं में हम यह देख सकते हैं। तुलसीदासजी इस रामकाव्य परंपरा के माध्यम से एक आदर्शमादी समाज की कल्पना की है।

**बीजशब्द :** रामाकाव्य, रामाकाव्य के प्रमुख कवि तुलसीदास, आदर्श समाज, आदर्श धर्म, समन्वयभावना

**मूल लेख :** राम काव्य की शुरुवात वाल्मीकि रामायण से है। रामकाव्य का उल्लेख महाभारत के वनपर्व, शान्तिपर्व, सभापर्व आदि में मिलता है। राम काव्यधारा की प्रमुख विशेषता यह है कि इसके सभी कवियों ने विष्णु के अवतार भगवान राम को ही अपनी कविता का विषय बनाया है। इसके राम शील, शक्ति और सौंदर्य की साकार प्रतिमा है। इस धारा के कवियों ने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति को अधिक महत्त्व दिया है। इसलिए कहा गया है ज्ञान कठिन है भक्ति सरल। राम काव्य में ज्ञान कर्म और भक्ति की अलग अलग महत्त्व स्पष्ट कर भक्ति को सर्वश्रेष्ठ बताया है। राम भक्त कवि जीवन का परम लक्ष्य भक्ति को मानते हैं इस जीवन से परे एक जीवन है उसका सुख इस जीवन के कर्मों के द्वारा संभव है। तुलसीदास रामचरित मानस के उत्तराखंड में कहते हैं -

**बड़े भाग मानुश तन पावा । सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन्हि नहीं गावा ॥**

**साधना धाम मोक्ष कर द्वारा। पाई न जेहि परलोका संवारा ॥**

भक्तिकाल के अस्थिर सामाजिक उलझाव के समय ही गोस्वामी तुलसीदास का श्रीगणेश हिंदी साहित्य में हुआ था। उस समय भारतीय जनता मुगलों के शासन से धक गयी थी। समाज में सभी प्रकार के आडंबरों और पाखण्डों से भरपूर था। विभिन्न पंथ, धार्मिक कर्मकाण्ड में लीन था। उस समय तुलसी का आगमन हिंदी साहित्य में हुआ। उस महानुभाव के अविर्भाव से भारतीय साहित्य को एक नया मोड़ प्राप्त हुआ है।

तुलसीदास के पहले रामभक्ति का जो प्रभाव रामानंद के द्वारा उत्तर भारत में तैयार कर दिया था तुलसी के द्वारा वह भारत के कोने-कोने में पहुँचा दिया। रामभक्ति काव्य परंपरा के सबसे मूल्यवान रचना 'रामचरितमानस' को प्राप्त है। रामकथा के ओज तथा माधुर्य को जनमानस की भाव भूमि पर अधिष्ठित करने का श्रेय भक्तकालीन भक्त कवियों को ही प्राप्त है। राम काव्य परंपरा में आने वाले आचार्यों के मतानुसार राम उत्तर वैदिक काल के दिव्य पुरुष हैं। वेदों में कुछ स्थलों पर राम शक्ति का प्रयोग अवश्य हुआ है वाल्मीकि रामायण को आदिकाव्य मानकर रामकथा का मूल स्रोत माना गया है इसमें राम उदात्त और असाधारण गुणों से संबद्ध दिव्य महापुरुष के रूप में हुआ है। वाल्मीकि रामायण में राम अलौकिक महापुरुष हैं किन्तु महाभारत में उनका स्वरूप अवतारी स्वरूप है। वैष्णव धर्म से सम्बन्धित है रामकाव्य-परंपरा। यह धर्म बौद्धिक धर्म के कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ। इसमें अवतारवाद की प्रमुखता है। इसमें विष्णु के दो रूप देखने को मिलते हैं- राम और कृष्ण। स्वामी रामानन्द के प्रयत्नों से 11वीं शताब्दी में रामभक्ति का प्रवर्तन हुआ। इन्होंने 'श्री सन्प्रदाय'

की स्थापना की। राघवानन्द इसके प्रमुख आचार्य थे इन्हीं के शिष्य थे स्वामी रामानन्दा। इन्होंने समाज के सभी लोगों के लिए रामभक्ति का दरवाजा खोल दिया। रामाभक्ति धारा को आगे बढ़ाने का श्रेय तुलसीदास को प्राप्त है। रामायण में भारतीय संस्कृति की अमिट छाप देखने को मिलते हैं। इसमें रामको उत्तम महापुरुष या नायक के रूप में माना गया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने निबंध 'भारत वर्ष में इतिहास धारा' में कहा है कि, "वाल्मीकि ने सर्वप्रथम रामकाव्य परंपरा का प्रवर्तन किया।"

हिंदी साहित्य के इतिहास को देखने पर राम काव्य परंपरा का एक व्यापक रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। डॉ. नागेंद्र द्वारा संपादित इतिहास ग्रंथ में लिखा है -हिंदी साहित्य का आदिकाल समसामयिक राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण की दृष्टि से राम काव्य की रचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त था। इस युग में कविगण मर्यादा पुरुषोत्तम राम की शौर्य शक्ति से समन्वित लीलाओं का गान करके बाहिर शक्तियों के आक्रमण के विरुद्ध राष्ट्र की सोई हुई ऊर्जा को अद्भुत कर सकते थे। किन्तु उन्हें अपने आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करने से इतना भी अवकाश न था कि वे राम के लोकरक्षक पावन चरित्र की ओर आकर्षित हो पाते। इस युग की कृतियों में मंगलानरण अथवा स्तुति के रूप में कहीं-कहीं रामकथा के कुछ प्रसंग दृक्कृत हो जाते हैं। तुलसीदास के पूर्व रामानंद के द्वारा ही हिंदी साहित्य में रामभक्ति का उदय हुआ था। इन्होंने शंकराचार्य और रामानुजाचार्य दोनों के सिद्धांतों को ग्रहण करके समाज के सभी लोगों को मार्ग खोल दिया। उन्होंने जाति पांति को भक्ति के मार्ग में बाधा समझते थे। उन्होंने अपने दोहे में कहा है-

**जाति - पांति पूछे नहि कोई।**

**हरि को भजै सो हरि का होई।**

राम भक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में तुलसीदास का स्थान प्रमुख माना जाता है। इन्होंने अपने अद्वितीय प्रतिभा के द्वारा रामकाव्य को हिंदी साहित्य के श्रेष्ठतम काव्य के रूप में रखा गया है। यह ग्रंथ मानव जीवन के विविध पक्षों को उजागर करने में सक्षम निकलते है। तुलसी की भक्ति समाज के सभी वर्ग के जातियों को मिलाने वाली थी। इस तौर पर उनका साहित्य भक्ति वर्ण, जाति, धर्म आदि के कारण किसी का बहिष्कार नहीं करती। जिन लोगों के लिए सामंत वर्ग ने मुक्ति के द्वार बन्द कर दिए थे, उन सबके लिए तुलसी ने उन्हें खोल दिया। तुलसी साहित्य एक और आत्म निवेदन और विनय का साहित्य है, दूसरी ओर वह प्रतिरोध का साहित्य भी है।<sup>5</sup> आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्येतिहास में लिखा है, "यह एक कवि ही हिंदी का प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।" तुलसीदास ने अपनी प्रमुख रचना रामचरितमानस के द्वारा समन्वय का अदभुत आदर्श प्रस्तुत किया। उनकी अंदर भेदी दृष्टि समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय और साहित्य में व्याप्त वैषम्य, असमानता, अलगाव, द्वेष और स्वार्थपरता की जड़ों को गहराई से नाप चुकी थी। इन सभी को उन्होंने समन्वय और सामंजस्य से दूर करना चाहा। लोकमंगल की भावना केवल सामंजस्य और समन्वय से ही संभव था। इसके लिए

तुलसीदास ने राम भक्ति के सहारे समन्वय का संदेश देने निकल पड़े। इस संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी ही तुलसी को लोग नायक की संज्ञा देते हैं और तुलसी के काव्य में समन्वय की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-“लोकनायक वही हो सकता है जो सामान्य कर सके, क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधनी संस्कृतियाँ, साधनाएं, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतियाँ प्रचलित है। तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शस्त्र का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, नर्गुण और सगुण का समन्वय, पंडित और अपांडित्य का समन्वय है। रामचरितमानस शुरू से अंत तक समन्वय काव्य है।”

तुलसीदास ने राम की शक्ति के बल पर ये तत्कालीन प्रवेशक समस्याओं का निराकरण किया। समन्वय की बिचारधारा को सशक्त बनाने के लिए उन्होंने अपने गंभीर अध्ययन और विवेचन करके धर्म के नाम पर प्रचलित आडंबर, अनाचार, जटिलता, जैसे कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समन्वय का मार्ग अपनाया। उन्होंने शिव के मुख से 'सोई सैम इष्टदेव रघुनीरा सेवत जाति सदा मुनिधीरा' कहलवाकर शिव को राम का उपासक घोषित किया तो राम के मुख से –

**संकर प्रिय मंदिरों ही शिव द्रोही मम दास।**

**ते नर करहि कल्प भरि घोर नरक महुँ वास।।”**

कहलवाकर राम को शिव का अनन्य भक्त घोषित किया। तुलसीदास ने सेतु निर्माण के समय भी राम से शिव की आराधना करवाकर समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने शिव और विष्णु में एकता की स्थापना की। धार्मिक समय की दृष्टि में उन्होंने सगुण और निर्गुण भक्तिधारा के क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया। श्री राम के परिवार के माध्यम से पारिवारिक समन्वय का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया है।

तुलसीदास अपने समय में प्रचलित राजनीतिक विश्रखलता को दूर करने का प्रयास किया। दार्शनिक विचारधाराओं के बीच समन्वय स्थापित किया। भक्ति और ज्ञान में अभेद स्थापित किया –

**“ भगतिहि ग्यानहि नहि कछु भेदा।**

**उभय हरहि भव संभव खेदा ॥**

तुलसीदास के बाद आने वाले कवियों ने रामकथा के संदर्भ में बहुत कुछ काव्य रचे हुए हैं लेकिन तुलसीदास के समान उतना प्रभावी रूप से उसे उल्लेख करने में वे असमर्थ रहे। उस कोडी में आने वाली रचनाएं हैं- केशव की 'रामचन्द्रिका', अग्रदास के रामध्यानमंजरी, प्राणचंद चौहान के रामायण महानाटक तथा हृदय राम के हनुमन्नाटक आदि। पंचवटी, साकेत, राम की शक्ति पूजा आदि आधुनिककाल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसमें आधुनिक संदर्भों में राम कथा के ऐतिहासिक व पौराणिक महत्त्व को चित्रित किया।

तुलसीदास ने अपनी साहित्य साधना किसी एक प्रचलित शैली में नहीं की लेकिन उस समय प्रचलित सभी काव्यशैलियों को अपनाकर समन्वय की दृष्टि से उन्होंने प्रस्तुति की है। उन्होंने मुक्तका, प्रबंध, और गीति आदि सभी शैलियों को अपनाया। रामचरितमानस उनका श्रेष्ठ महाकाव्य है तो विनय पत्रिका एक श्रेष्ठ मुक्त रचना है। ब्रज, अवधि और संस्कृत भाषा का उन्होंने प्रयोग किया है। मानस में उन्होंने रचनात्मक कौशल के साथ साथ संस्कृत और अवधि भाषाओं का सामंजस्य स्थापित किया है।

**जय राम रमा रामरमनं समनं|भवताप भयाकुल पाहि जनं ॥**

**सरनागत मागत पाहि प्रभो|अवधेस सुरेस रमेस विभो।**

उनके काव्य में जहाँ एक ओर भाषा का साहित्य सौंदर्य दृष्टिगोचर होता है दूसरी ओर भाषा का अत्यंत सरस रूप देखने को मिलता है।

**निष्कर्ष:-**

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में रामकथा के माध्यम से जो आदर्श स्थापित किया है उसके पीछे लोक कल्याण की भावना हम देख सकते हैं। अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को अनेक प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया है। भारतीय संस्कृति से परिचित होना चाहता है तो उसे तुलसीदास द्वारा रचित रामकाव्य से बढ़कर दूसरा साधन न मिलेगा। काव्य सौंदर्य की दृष्टि से भी उनका साहित्य अद्वितीय माना जाता है।

\*\*\*\*\*

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-**

1. गोस्वामी तुलसीदास रामचरित मानस, गीताप्रेस गोरखपुर 1965
2. हिंदी साहित्य के इतिहास, नागेन्द्र, पृष्ठ संख्या 184, संस्करण: 2003
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठसंख्या 118, संस्करण: 2007, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली-110002
4. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 1012
5. शिवदान सिंह चौहान, दार्शनिक विचार और समन्वयवाद (आलोचनात्मक लेख), पृष्ठ 30- 314
6. तुलसीदास, रामचरितमानस, 114 ख / 77
7. तुलसीदास, रामचरितमानस, उत्तराखण्ड, 13 ख / छन्द . 1